8

रूही आखिर क्या लिखती है?

*अक्षय कुमार दीक्षित**

दृश्य 1

रूही ने कागज़ को एक हाथ से पकड़ रखा है। दूसरे हाथ की उँगलियों से पेंसिल को पकड़कर वह कुछ गोले और कुछ आड़ी-तिरछी लकीरें खींच रही है। साथ-साथ वह बड़ों की सी अदा से बोल रही है – ए, बी, सी, एक, दो, मम्मी, चाऊ जी...

इस दृश्य से आप रूही के बारे में कितना कुछ जान-समझ सके? आप मानें या ना मानें, आप इन दो-तीन पंक्तियों से ही रूही के बारे में कई बातें जान चुके हैं। यकीन नहीं हो रहा? चलिए, अभी यकीन हो जाएगा।

इन बातों को पढ़कर यह अंदाज़ा होता है कि शायद अभी रूही ने स्कूल जाना शुरू नहीं किया है। शायद अभी वह डेढ़-दो साल की है। कई शब्दों का उच्चारण करने के लिए उसने अपनी ही अनोखी शब्दावली विकसित कर ली है। उदाहरण के लिए, 'ताऊ जी' का उच्चारण करने के लिए वह 'चाऊ जी' बोलती है। वह इस आयु में भी कागज़, पेन, पेंसिल के उपयोग से अच्छी तरह परिचित हो चुकी है। उसे पता है कि पेंसिल और कागज़ को किस प्रकार पकड़ सकते हैं और किस प्रकार पेंसिल का उपयोग कुछ उकेरने के लिए कर सकते हैं। रूही जो काम कर रही है, वह अपनी इच्छा से कर रही है और बिना किसी निर्देश या दबाव के कर रही है। वह जानती है कि वह क्या 'लिख' रही है क्योंकि वह कागज़ पर जो कुछ बना रही है, उसका उच्चारण भी कर रही है। वह जानती है कि बोली गई बातों या शब्दों को लिखा जा सकता है। वह कुछ उकेरते हुए बड़ों की तरह बोल-बोलकर 'लिखने' का अभिनय कर रही है, लेकिन क्या रूही जो कुछ कर रही है उसे 'लिखना' कहा जा सकता है?

दृश्य 2

रूही कागज़ को थामे पेंसिल से कुछ लकीरें खींच रही है। कुछ गोले, कुछ लंबी लकीरें, कुछ टेढ़ी-मेढ़ी लकीरें। कुछ देर में किसी जानवर जैसा कुछ बन जाता है। अब रूही रंगीन पेंसिल उठा लेती है। उसने कागज़ पर तरह-तरह के रंग 'भर' दिए हैं। चित्र के नीचे रूही ने अलग से कुछ लकीरें खींची हैं। पूछने पर रूही ने बताया, "ये 'कुत्ता' लिखा है"। यह सुनकर रूही के माता-पिता खुश होकर बोले, "दिनभर बस इसी में लगी रहती है। घर की कोई दीवार नहीं बची जहाँ इसने अपनी कलाकारी न दिखाई हो।"

* सी- 633, जे.वी.टी.एस. गार्डन, छतरपुर एक्सटेंशन, नयी दिल्ली 110074

अब तो आप खुद रूही के बारे में यकीनन बहुत-सी बातें बताना चाहेंगे, है न? जैसे कि, रूही को चित्र बनाना पसंद है। रूही चीज़ों में रंग भरना शुरू कर चुकी है, उसे पता है कि चित्र किसी और चीज़ को 'व्यक्त' करते हैं आदि। ये सारी बातें तो हैं ही, लेकिन हम आपका ध्यान एक और बात की तरफ़ दिलाना चाहते हैं। इस दृश्य से यह समझ में आता है कि रूही जानती-समझती है कि हर चीज़ का एक नाम होता है, जिसे लिखा जा सकता है और उस लिखे हुए को पढ़ा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, रूही लिखने की अर्थपूर्णता को समझती है। एक और बात इस दृश्य से उभरकर सामने आती है। रूही जो भी काम कर रही है, उसके लिए उसके माता-पिता प्रोत्साहित करते हैं, उसके कामों पर खुश होते हैं, उसे रोकते-टोकते नहीं हैं और उसकी कलाकारी पर 'गर्व' का अनुभव करते हैं। आपके विचार से जो कुछ रूही कर रही है, इसे 'लिखना' कहा जा सकता है?

दृश्य 3

रूही पहली कक्षा में बैठी है। उसकी अध्यापिका जी ने कहा, "बच्चों, आज हम आम का चित्र बनाएँगे।" रूही को चित्र बनाना अच्छा लगता था। वह ख़ुशी से उछल पड़ी और फ़टाफ़ट बस्ते में से कॉपी, रंग निकाल लिए। अध्यापिका जी ने श्यामपट्ट पर सभी बच्चों को आम का चित्र बनाकर दिखाया। फिर कहा, "अब सारे बच्चे आम का चित्र बनाओ।" रूही ने जल्दी-से एक आम बनाया और उसमें लाल-पीला-हरा-नीला रंग भरकर उसे सजा दिया। इसके बाद वह खुशी-खुशी अपना चित्र दिखाने के लिए अध्यापिका जी के पास गई। अध्यापिका जी ने कहा, "अरे, आम कहीं ऐसा होता है रूही! मैंने बनाकर दिखाया तो है कि कैसा चित्र बनाना है। चलो, एक बार फिर-से सुंदर-सा 'आम' बनाकर लाओ।"

रूही को कुछ बातें समझ में आईं और कुछ समझ में नहीं आईं। इतना पता चल गया कि अगर वह मैडम जैसा चित्र बना देगी तो मैडम को अच्छा लगेगा। अबकी बार उसने अध्यापिका जी जैसा चित्र ही बनाया। अध्यापिका जी ने उसकी प्रशंसा की और उसकी कॉपी पर एक सितारा बना दिया।

आप ही बताइए कि यह दृश्य आपको रूही के बारे में क्या-कुछ बता रहा है। शायद आप रूही का बनाया चित्र देखकर कहें कि आम तो ऐसा होता ही नहीं है। शायद आपको ऐसा लगता हो कि अध्यापिका ने जो आम बनाकर दिखाया था, आम तो वैसा ही होता है। हालाँकि अध्यापिका ने जो आम का चित्र बनाया था, वैसा आम किसी पेड़ पर नहीं लगता लेकिन हो सकता है कि आपने वैसा आम सचमुच कभी बाज़ार में देखा हो या कभी खाया हो।

आपके विचार से इस घटना के बाद रूही की सोच में क्या बदलाव हुए होंगे? एक और सवाल— रूही जो कुछ कर रही है, क्या आप इसे 'लिखना' कहेंगे?

रूही के जीवन के ये तीनों दृश्य रूही जैसे करोड़ों बच्चों के बारे में काफ़ी-कुछ व्यक्त कर देते हैं या व्यक्त कर सकते हैं बशर्ते हम थोड़ा गहराई से उन पर विचार करें। आइए, अब इन दृश्यों के बारे में बातचीत करते हैं। हम ये बातचीत पढ़ने-लिखने या भाषा सीखने के दृष्टिकोण से करेंगे।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 46 5/26/2017 9:26:59 AM

आप रूही के उदाहरण और अपने जीवन के अनुभवों से जानते हैं कि बच्चे 'स्कूल' की चारदीवारी में प्रवेश लेने से पहले ही जीवन के स्कूल में बहुत कुछ सीख चुके होते हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो, बच्चे जब स्कूल में दाखिला लेते हैं तो उनके पास पहले से ही मौखिक और लिखित भाषा के बहुत-से कौशलों का अच्छा-खासा खज़ाना मौजूद होता है। वे अपने परिवेश में बोली और लिखी जा रही भाषाओं की शब्दावली, व्याकरण, भाषायी प्रयोगों आदि की गहरी समझ लेकर स्कूल में आते हैं। परिवेश की भाषाओं का मतलब है— जहाँ बच्चा रहता है, उस समाज के लोगों और अपने परिवार के लोगों की बोलचाल की भाषाएँ, जो एक भी हो सकती हैं और अनेक भी। इतना ही नहीं, उनके पास अपने परिवेश की भाषाओं की लिपि की भी समझ मौजूद होती है। उदाहरण के लिए—

- वे कहीं पर किसी चिप्स का विज्ञापन /लोगो देखकर समझ जाते हैं कि वहाँ क्या लिखा होगा।
- वे पैकेट पर छपी कीमत को खोजना और पढ़ना जानते हैं।
- वे जानते हैं कि किसी लिखी हुई सामग्री को पढ़ने के लिए नज़र को किस दिशा से किस दिशा में बढ़ाना है।
- वे कैलेंडर या घड़ी के उपयोग से परिचित होते हैं। कई बच्चों को तो समय या दिन देखना भी मालूम होता है।
- वे जानते हैं कि बाइक, कार, टीवी या मोबाइल पर उसकी कंपनी का नाम लिखा है।
- वे यह भी जानते हैं कि कुछ लिखने के लिए या चित्र बनाने के लिए कागज़ के किस हिस्से से किस ओर कलम चलानी है।
- बच्चे अपने मन की बातों को व्यक्त करने के लिए चित्र बनाने के माध्यम से उपयोग में लाते हैं।
- वे जानते हैं कि दो शब्दों के बीच में छोड़ी गई जगह का क्या मतलब है, दूसरे शब्दों में, एक शब्द के बाद थोड़ी जगह छोड़कर अगला शब्द लिखा जाता है।
- वे जानते हैं कि शब्दों के ऊपर एक लकीर होती है (देवनागरी लिपि में) और शब्दों के साथ कुछ अन्य निशान भी होते हैं। (विरामचिह्न)

ऊपर दी गई सूची से हमें यह अंदाज़ा भी हो जाता है कि चित्र बनाने और लिखने में जितना नज़र आता है, उससे कहीं अधिक गहरा संबंध है।

चित्र लेखन

शायद अधिकतर 'बड़ों' के लिए बच्चों द्वारा बनाए गए चित्रों या लकीरों का कोई मतलब नहीं होता। शायद उनको यही लगता है कि चूँकि बच्ची के हाथ में कलम आ गई थी, उसने हाथ को चाहे जैसे घुमा दिया होगा और बस, कागज़ पर निरर्थक लकीरें खिंच गईं। नाहक दीवार या कागज़ गंदा हो गया। 'बड़ों' की नज़र में इन लकीरों का कोई अर्थ नहीं होता इसलिए उन्हें यही लगता है कि बच्चों के लिए भी इन लकीरों का कोई मतलब नहीं होगा। लेकिन कभी किसी बच्चे से पूछकर देखिए कि उसने क्या 'बनाया' है। बच्चे के जवाब आपको हैरान कर देंगे। आपको पता चलेगा कि

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 47 5/26/2017 9:26:59 AM

जिन लकीरों को आप बेमतलब समझ रहे थे, बच्चों के लिए उनका स्पष्ट अर्थ मौजूद होता है। या हम यह भी कह सकते हैं कि बच्चे कुछ अभिव्यक्त करने के लिए ही कुछ बनाते हैं। इन लकीरों में बच्चे के परिवार, भाई, बहन, माँ, पिता, ताऊ जी से लेकर सूरज, चाँद, भूत और गेंद तक छिपे हो सकते हैं। ज़रूरत सिर्फ़ इतनी है कि हम उन्हें बच्चों की नज़र से देखें।

बच्चे भाषा कैसे सीखते हैं? इस सवाल का जवाब आसान नहीं है। सालों से भाषा-वैज्ञानिक, मनोवैज्ञानिक और शिक्षा-शास्त्री इस सवाल का जवाब खोजने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ बातें समझ में आ गई हैं और बहुत से सवालों के जवाब खोजे जाने अभी बाकी हैं। इतना तो हम समझ ही चुके हैं कि बच्चे की भाषायी समझ का विकास कोई एकतरफ़ा सीधा-सीधा रास्ता नहीं है। यह बहुत-सी जटिल प्रक्रियाओं का मिला-जुला परिणाम है। इस सफ़र में कुछ पड़ावों की मोटे तौर पर पहचान कर ली गई है लेकिन इसका मतलब यह नहीं कि इन पड़ावों पर हर बच्चा ज़रूर पहुँचेगा या एक ही समय पर पहुँचेगा। परंपरागत तौर पर गिनवाए जाने वाले कौशल यानी सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना भी कुछ लोगों की नज़रों में भाषायी विकास के 'पड़ाव' हो सकते हैं। उन्हें लगता है कि बच्चा पहले सुनना, फिर बोलना, फिर पढ़ना और अंत में लिखना सीखता है। लेकिन हम जिन पड़ावों की बात कर रहे हैं, वे इनसे अलग हैं। आप जानते ही होंगे कि भाषायी कौशल, जैसे— सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े होते हैं। इसलिए बच्चे के भाषायी विकास के हर पड़ाव पर ये सभी एक साथ मौजूद होते हैं।

> बच्चा जो चित्र बनाता है वह उसके अंदर की अनुभूति द्वारा निर्मित होता है। दूसरों का आँखों देखा नहीं, खुद देखा, खुद महसूस किया हुआ। बच्चा इस जगत को ऐसे देखता है, जैसे उसे उसका अनुभव होता है और जिस तरह की प्रतिक्रियाएँ उसके अंदर होती हैं, उन सबको लेकर उसके दिमाग में आकारों का निर्माण होता है। आकार ही उसकी चित्रभाषा की बारहखड़ी होती है। इसलिए जो चित्र वह अपनी भाषा द्वारा बनाते हैं, वह भाषा के मापदंड के हिसाब से ठीक होते हैं। चित्र अच्छा बना या गलत, यह कहने का अधिकार उसी व्यक्ति को है, जो बच्चे की इस 'चित्र-भाषा' से परिचित है। एक भाषा वाला व्यक्ति अगर दूसरी भाषा के वाक्य की रचना की परख अपनी भाषा के व्याकरण से करे और कहे कि वाक्य-रचना गलत है, तो अन्याय होगा। बच्चे की आकार की भाषा उसके पूर्ण व्यक्तित्व के अनुभव द्वारा बनती है, और सयाने के आकार की भाषा अक्सर केवल आँख के अनुभव से बनती है। ये दोनों निराली हैं। इनकी एक-दूसरे के साथ तुलना नहीं की जा सकती।
>
> शिक्षा का वाहन — कला
> — देवी प्रसाद

बच्चे की मौखिक भाषा के विकास में कुछ अवस्थाएँ आसानी से पहचानी जा सकती हैं। ऐसी ही आसानी से पहचानी जा सकने वाली एक अवस्था है— 'स्वनिर्मित शब्दावली का प्रयोग।' इसका मतलब बच्चे के जीवन की वह अवस्था या दौर है, जब बच्चा कुछ चीज़ों के लिए खुद कोई शब्द बना लेता है और उसका उपयोग करता

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 48 5/26/2017 9:27:00 AM

है। यह स्वनिर्मित शब्द किसी 'पारंपरिक शब्द' से मिलता-जुलता भी हो सकता है और बिलकुल नया भी। उदाहरण के लिए, चाऊ जी (ताऊ जी), निनी (नींद) या गन्नू (किसी का बिलकुल नया नाम)।

मौखिक भाषा के विकास की तरह, लेखन के सफ़र में भी कुछ पड़ाव बच्चे के जीवन में ज़रूर आते हैं। चित्र बनाना ऐसा ही एक पड़ाव है। इतना तो स्पष्ट है कि बच्चे अपने मन की बातों को, कल्पनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए चित्रों का उपयोग करते हैं। बड़ों को भले ही इन चित्रों में कोई अर्थ नज़र न आए, लेकिन बच्चों को उनके चित्रों का मतलब पता होता है। इन बातों को एक उदाहरण की सहायता से समझते हैं।

दृश्य 4

कक्षा एक में रूही ने कुछ गोले बनाए हैं। उसके अध्यापक ने उससे बात की और पूछा, "ये क्या बनाया है?"

रूही ने बताया , "मैंने बादल बनाया है।"

"अच्छा, बादल ऐसा होता है?"

"हाँ, बादल ऐसे ही लाइन लगाकर तो खड़े होते हैं।" रूही ने समझाते हुए कहा।

रूही को पता है कि उसने क्या बनाया है। साथ ही वह यह भी चाहती है कि आप उसके चित्र को उसकी नज़र से देखें, यानी आप भी उसके चित्र को बादल ही मानें।

क्या इन अर्थों से भरी लकीरों को लिखना कहा जा सकता है? इस प्रश्न का उत्तर देने से पहले हमें यह समझना होगा कि हम क्यों लिखते हैं।

लिखने का एक ही मुख्य उद्देश्य होता है— खुद को अभिव्यक्त करना

आप जानते हैं कि हम मौखिक रूप से खुद को अभिव्यक्त करते हैं, यानी बोलकर अपनी भावनाओं, विचारों, कल्पनाओं, परेशानियों, खुशियों, ज़रूरतों आदि को व्यक्त करते हैं। अरर... एक मिनट रुकिए, क्या हम सिर्फ़ बोलकर ही खुद को अभिव्यक्त करते हैं? यदि आपको ऐसा ही लगता है तो नीचे दिए गए उदाहरणों पर एक नज़र डालिए—

- कोमल से माँ ने पूछा, "बस्ता कहाँ है?" कोमल ने खाना खाते-खाते ऊँगली एक ओर बढ़ा दी।
- स्कूल में घंटी बजी। घंटी बजते ही सब बच्चे "छुट्टी" कहते हुए कमरों से बाहर निकल आए।
- मन्नू जन्म से मूक-बधिर है। भूख लगने पर उसने अपनी माँ का पल्लू खींचा और उंगलियों से बताया कि भूख लगी है। माँ ने भी उंगलियों से बताया कि खाना तैयार है।

इन उदाहरणों से आपको एहसास हो गया होगा कि हम सिर्फ़ शब्दों के उच्चारण द्वारा खुद को अभिव्यक्त नहीं करते, बल्कि इसके और भी कई तरीके हैं जिन्हें हम अशाब्दिक / सांकेतिक या भाव-भंगिमाओं द्वारा अभिव्यक्त कर सकते हैं।

जिस प्रकार हम बोलकर, इशारों या भाव-भंगिमाओं से अपनी भावनाओं, विचारों, कल्पनाओं, परेशानियों, खुशियों, ज़रूरतों आदि को व्यक्त करते हैं, उसी तरह हम लिखित रूप से भी खुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं, लेकिन जिस तरह मौखिक अभिव्यक्ति के कई रूप हैं, उसी तरह लिखित अभिव्यक्ति के भी कई रूप हैं। कुछ रूपों में शब्दों

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 49 5/26/2017 9:27:00 AM

का उपयोग किया जाता है और कुछ रूपों में बिना शब्दों का उपयोग किए भी हम खुद को अभिव्यक्त कर सकते हैं। जिस तरह बच्चे द्वारा खुद को मौखिक रूप से अभिव्यक्त करने की शुरुआत 'पारंपरिक रूप से मौखिक अभिव्यक्ति' करने से बहुत पहले शुरू हो जाती है, उसी तरह उसकी लिखित अभिव्यक्ति की शुरुआत 'पारंपरिक लिपि' या 'शब्दों के पारंपरिक लिखित रूप' के इस्तेमाल से बहुत पहले शुरू हो जाती है। चित्रों द्वारा खुद को अभिव्यक्त करना इसी अवस्था का एक हिस्सा है। इस दौर को हम "चित्र-लेखन" का नाम देते हैं।

'पारंपरिक रूप से लेखन' और 'चित्र-लेखन' की अवस्था में और भी कई समानताएँ हैं। इन समानताओं को पहचानने के लिए आपको एक काम करना होगा। आप एक काम कीजिए। अभी एक कागज़-कलम उठाइए और जो मन में आए उसे एक मिनट तक लिखते जाइए।

लिख लिया?

अब ज़रा विचार कीजिए, आपने जो कुछ लिखा, उसके लिए क्या-क्या किया? क्या-क्या सोचा? आपने ज़रूर ऐसा ही कुछ सोचा होगा—

- कलम और कागज़ कौन-सी चुनूँ?
- किस बारे में लिखूँ?
- कितना लिखूँ?
- क्या लिखूँ?
- कैसे शुरू करूँ?
- कैसे समाप्त करूँ?
- किन शब्दों का उपयोग करूँ?
- कोई शब्द कैसे लिखूँ/ लिखा जाता है?

आप समझ गए होंगे कि कलम उठाकर सिर्फ़ कुछ शब्द बना देना ही लिखना नहीं है। लिखने के लिए आपने जाने-अनजाने कई तरह के निर्णय लिए हैं, कई तरह के चुनाव किए हैं, तब जाकर आप कुछ लिख सके। उदाहरण के लिए, शब्दों का चुनाव, माध्यम का चुनाव, वर्तनी का चुनाव आदि।

एक चयन जो सबसे महत्वपूर्ण या सबसे मुश्किल रहा होगा, वह है विषय और विषय-वस्तु का चुनाव। विषय-वस्तु का चुनाव हम आमतौर पर लिखने के उद्देश्य और जिसके लिए हम लिख रहे हैं, यानी पाठक को ध्यान में रखकर करते हैं। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि लेखन को प्रभावित करने वाले तत्व दो हैं, पाठक और उद्देश्य।

इन बातों को थोड़ा और विस्तार से समझ लेते हैं। लेखन के ज़रिए हम अपने विचार को उस व्यक्ति के पास पहुँचाना चाहते हैं जो हमारे सामने मौजूद नहीं है। कई बार हम सूचना या खबर के लिए, याद रखने के लिए, मज़े या खेल के लिए और हिसाब-किताब करने के लिए भी लिखते हैं। उद्देश्य कोई भी हो, लेकिन यह तो साफ़ है कि हम किसी व्यक्ति या पाठक को ध्यान में रखकर ही कुछ लिखते हैं। वह पाठक खुद लिखने वाला भी हो सकता है। उदाहरण के लिए, मैं डायरी लिखता हूँ, इसलिए कि शायद किसी दिन मैं इसे पढ़ूँगा। अब एक बार फिर उसी गतिविधि पर विचार कीजिए जो आपने थोड़ी देर पहले की है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 50 5/26/2017 9:27:00 AM

इस गतिविधि को करते हुए एक और बात आपको समझ में आ गई होगी कि लिखना एक प्रक्रिया है। इसमें कई चीज़ें शामिल हैं, लेकिन यह शारीरिक प्रक्रिया से ज़्यादा मानसिक प्रक्रिया है, सोचने की प्रक्रिया है क्योंकि लिखने के लिए कलम उठाने से पहले, लिखने के दौरान और कलम रखने के बाद भी आपकी उँगलियों से ज़्यादा काम आपके दिमाग ने किया।

> लिखना एक तरह की बातचीत ही है। लिखते वक्त हम किसी से संवाद कर रहे होते हैं, हालाँकि वह व्यक्ति हमारे सामने नहीं होता। बहुत-सी बातें हम किसी सूचना, विचार या याद को सुरक्षित रखने के लिए लिखते हैं।
>
> – कृष्णकुमार, शिक्षाविद्

अभी आपने जो कुछ लिखा, वह क्यों लिखा? आपके सामने एक चुनौती दी गई थी, एक समस्या दी गई थी, जिसे आपने पूरा किया। इस समस्या का समाधान करके आपको संतोष का अनुभव भी हुआ होगा। वास्तव में, कुछ भी लिखना 'समस्या-समाधान' की ही प्रक्रिया होती है। अभी कुछ पल पहले आपने अनेक समस्याओं का समाधान किया है, जैसे— क्या लिखें, वर्तनी कैसी हो, लेखन किस पर केंद्रित करें, कितना लिखें, कैसे शुरुआत करें, प्रस्तुत कैसे करें, अंत कैसे करें? आदि। इन समस्याओं को दूर करने के लिए आपने कई निर्णय लिए। हर बार आप अपने निर्णयों को परखने के लिए बार-बार वापस लौटकर आगे बढ़े। यह है लिखना

जब बच्चे चित्र बना रहे होते हैं, उस दौरान वे भी बिलकुल इन्हीं प्रक्रियाओं का पालन करते हैं। वे भी समस्याओं का समाधान खोजने के लिए निर्णय लेते हैं। वे भी विषय का चुनाव करते हैं, माध्यम का चुनाव करते हैं, प्रतीकों और संकेतों के बारे में फ़ैसला करते हैं। अपने निर्णयों को परखने के लिए बार-बार वापस लौटकर आगे बढ़ते हैं।

अब हम बिना किसी संकोच के कह सकते हैं कि बच्चे चित्रों द्वारा खुद को अभिव्यक्त करते हैं, इसलिए चित्र बनाना भी लेखन का ही एक रूप है। अब आप एक बार दृश्य 3 को फिर से पढ़िए। अब आप उस दृश्य के बाद पूछे गए सवाल का पूरे आत्मविश्वास के साथ उत्तर दे सकते हैं। है न?

अब सवाल यह उठता है कि हम बच्चों के लेखन की इस अवस्था में उनका साथ कैसे दे सकते हैं?

आपने अनुभव किया होगा कि दृश्य 3 में अध्यापिका जी एक चित्र तो बनवा रही हैं, लेकिन उसका विषय वे ही निर्धारित कर रही हैं। यह भी हो सकता है कि वे अपनी कक्षा में बच्चों से रोज़ चित्र बनवाती हों और कभी-कभी खुद विषय दे देती हों और कभी-कभी बच्चों को खुद विषय चुनने के लिए स्वतंत्र छोड़ देती हों। यदि ऐसा है, तो इसमें किसी को कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए। लेकिन यदि वे हमेशा खुद ही चित्रों के विषय निर्धारित कर देती हैं, तो इसे सही तरीका नहीं कहा जा सकता। चित्रों का विषय बच्चों की पसंद और उनकी सहमति से ही चुना जाना चाहिए।

दृश्य 3 में आपने देखा कि रूही ने जब अपने मन से आम का चित्र बनाया तो अध्यापिका ने उसे स्वीकार

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 51 5/26/2017 9:27:01 AM

नहीं किया और वैसा ही चित्र बनाने के लिए कहा जैसा उन्होंने बनाया था या जैसा आमतौर पर किताबों में बना होता है। यहाँ हमें विचार करने की ज़रूरत है कि क्या दुनिया में सभी आम एक जैसे आकार या रंग के होते हैं? क्या रूही ने वैसा आम कभी देखा होगा जैसा अध्यापिका जी ने बनाया है? क्या वैसे आम होते भी हैं? मान लीजिए, वैसे आम होते हैं, तो भी क्या ज़रूरी है कि रूही वैसे आम ही बनाए? क्या वह अपनी कल्पना से अनोखा आम नहीं बना सकती या ज़रूरी है कि रूही आम ही बनाए? हो सकता है आम का नाम सुनकर उसे अपने गाँव के आम के पेड़ की याद आ रही हो या कच्चे आम की चटनी की याद आ रही हो, जिसे उसकी माँ सिल-बट्टे पर रगड़कर खूब नमक-मिर्च डालकर बनाती हैं। अगर उसने आम की जगह सिल-बट्टा बना दिया, तो क्या उसकी अभिव्यक्ति की प्रशंसा नहीं होनी चाहिए? चित्र बनाने का उद्देश्य भी तो खुद को अभिव्यक्त करना ही है!

अभिव्यक्ति के साथ आज़ादी न जुड़ी हो तो उस अभिव्यक्ति का कोई मतलब नहीं रह जाता। इसलिए, अगर हम चाहते हैं कि बच्चे चित्र बनाकर या 'पारंपरिक लेखन' द्वारा खुद को अच्छी तरह अभिव्यक्त कर सकें तो हमें उन्हें इसके मौके और आज़ादी देनी होगी।

चित्र-लेखन की इस अवस्था में हम बच्चों का साथ देने के लिए निम्नलिखित कार्य कर सकते हैं—

- बच्चों को एक जैसे या एक ही शैली के चित्र बनाने के लिए मजबूर न करें। अगर कोई विषय देना भी हो तो कई उदाहरण दिखाएँ। उदाहरण के लिए, फूल बनवाना हो तो कई फूल दिखाएँ। घर बनवाना हो तो अपने-अपने घर बनाने के लिए कहें, न कि झोंपड़ी बनवाएँ।
- अपने चित्र को बच्चों पर थोपने की कोशिश न करें।
- बच्चों को अपने जीवन, कक्षा, स्कूल, घर आदि के अनुभवों को चित्रों द्वारा व्यक्त करने के लिए प्रेरित करें।
- पढ़ी-सुनी कहानियों और कविताओं के बारे में भी चित्र बना सकते हैं।
- आमतौर पर बच्चे अपने चित्रों को बेहतर बनाना चाहते हैं। इसलिए आप उन्हें बेहतर नमूने दिखाकर उनकी अभिव्यक्ति को और मज़बूत करने में सहायता कर सकते हैं।
- चित्रों के बारे में बच्चों से बात करें और जानने की कोशिश करें कि बच्चे ने क्या सोचकर वह चित्र बनाया है और उसे वैसा ही क्यों बनाया है।
- चित्रों को अच्छी तरह प्रदर्शित करें। इसके लिए कक्षा में एक जगह निर्धारित कर दें जिसे 'चित्रों का कोना' नाम दिया जा सकता है। चित्रों पर बच्चों या चित्र का नाम (विषय) भी लिखवाया जा सकता है।
- कक्षा का माहौल ऐसा बनाएँ, जिसमें बच्चे खुलकर अपनी बात चित्र बनाकर या पारंपरिक रूप से लिखकर व्यक्त करने में किसी डर या झिझक का सामना न करें।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 52 5/26/2017 9:27:01 AM

बालक की आकारों की भाषा अपने ही निराले ढंग की होती है। वे आकार केवल आँख से दिखने वाले आकारों से भिन्न होते हैं और उन आकारों का स्वरूप बालक की उम्र और उसके अनुभवों के साथ बदलता जाता है। अगर बालक को उम्र के हिसाब से अनुभव भी उपयुक्त ढंग के मिल रहे होंगे तो उसके ये आकार भी अपनी स्वाभाविक गति से विकसित हो रहे होंगे।

शिक्षा का वाहन — कला, देवीप्रसाद, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास

चित्रों के साथ

अब आप दृश्य 2 को एक बार फिर देखिए। इस दृश्य में रूही अपने मन से एक चित्र बना रही है और उसका नाम भी लिख रही है। भले ही उसने जो नाम लिखा है, उसे उसके माता-पिता 'पढ़' नहीं सकते, लेकिन रूही को पता है कि उसने क्या लिखा है। आपने ध्यान दिया होगा कि रूही ने यहाँ अपनी ही एक लिपि गढ़ ली है, ठीक उसी तरह, जैसे कि मौखिक भाषा सीखते हुए उसने कभी नए शब्द गढ़ लिए थे।

उसके माता-पिता के लिए उन लकीरों का कोई मतलब नहीं है जिन्हें रूही ने 'कुत्ता' लिखने के लिए गढ़ा है। रूही के माता-पिता के लिए पढ़ने या लिखने का अर्थ है, 'परंपरागत तरीके से लिखना या पढ़ना', वह तरीका जिसे देखने की उनकी आँखें आदी हैं। यानी कु और त्ता! फिर भी खुशी की बात यह है कि वे रूही की अभिव्यक्ति के रूप का विरोध नहीं कर रहे बल्कि खुश हो रहे हैं। इससे रूही को अनजाने में ही प्रोत्साहन और समर्थन मिल रहा है जो कि बच्चे के भाषायी विकास के लिए बहुत ज़रूरी है।

दृश्य 5

रूही एक-डेढ़ साल की है। उसकी माँ कभी-कभी रूही को शांत करने के लिए उसके मुँह में शहद भरा एक निप्पल लगा देती है। न जाने कब रूही ने उसे 'कोकोजी' कहना शुरू कर दिया। अब वह सोने से पहले कोकोजी को खोजती और उसके साथ खेलती है। कुछ समय के बाद उसने कोकोजी को 'काका' कहना शुरू कर दिया। खुद बनाए शब्दों के साथ-साथ रूही शब्दों को परंपरागत रूप से बोलने की कोशिश भी करती है, जैसे— अतरी (छतरी), अप्पल (चप्पल), स्पिति (लिपस्टिक), बिनी (बिंदी) "बिंदी किसने लगाई है?" एक बार माँ ने रूही के

माथे पर बिंदी देखकर पूछा। रूही ने अपने सीने पर हाथ रखकर जवाब दिया और खुशी से कहा, "बिनी" यानी बिंदी रूही ने लगा रखी है।

"किसने लगाई?" माँ ने फिर पूछा। अबकी बार रूही ने अलग उत्तर दिया, "बिनी बुआ"

माँ ने हँसते हुए कहा, "अच्छा!!! बिंदी बुआ ने लगाई!"

आइए, अब इस दृश्य के बारे में सोच-विचार करते हैं। आप अपने जीवन के अनुभवों से जानते होंगे कि प्रत्येक बच्ची के भाषा सीखने के दौरान एक समय ऐसा आता है जब वह खुद के बनाए नए-नए शब्दों का इस्तेमाल करना शुरू कर देती है। बड़े लोग उन शब्दों के अर्थ नहीं जानते, लेकिन बच्ची को उनका समझदारी से इस्तेमाल करते

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 53 5/26/2017 9:27:02 AM

देखकर उनके अर्थ समझ जाते हैं और वे भी उनका इस्तेमाल शुरू कर देते हैं। इस तरह हर बच्ची के साथ घर की एक घरेलू शब्दावली बन जाती है। हालाँकि समय के साथ-साथ धीरे-धीरे बच्ची इन स्वरचित शब्दों का प्रयोग छोड़कर उन शब्दों का उपयोग शुरू कर देती है, जिनका उपयोग उसके परिवेश में हो रहा है। भाषा सीखने और उसे अपना बनाने की यह एक महत्वपूर्ण कड़ी है, जिसमें बच्ची अपने अनोखे तरीकों से नए-नए शब्द गढ़ती है और उनका सार्थक संदर्भों में इस्तेमाल करती है। रूही की तरह सभी बच्चे परिचित नामों के परंपरागत उच्चारण की कोशिश भी करते हैं। जब 'बड़े' लोग उनके प्रयास को समझ जाते हैं तो उन्हें सही दिशा में बढ़ने के लिए प्रोत्साहन और प्रेरणा मिलती है। जब बच्चे कुछ कहने की कोशिश करते हैं तो 'बड़े' धैर्य से उन्हें सुनते हैं, उनकी बात को समझने की कोशिश करते हैं और उस बात का पारंपरिक भाषा में जवाब या अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

लेखन कौशल के विकास में भी ठीक इसी तरह की अवस्थाएँ आती हैं, जिनमें बच्चे खुद की वर्तनी गढ़ते हैं या परंपरागत वर्तनी को सटीकता से दोहराने की कोशिश करते हैं। अगर आप बच्चों की अभिव्यक्ति को समझकर उसके बारे में टिप्पणी करेंगे या प्रतिक्रिया देंगे तो बच्चों के लेखन-कौशल के विकास में और अधिक सहायता मिल सकेगी।

ऊपर दिए उदाहरण में आपने एक और बात गौर की होगी। रूही जो बातें कह रही है, भले ही वे एक शब्द या दो शब्द हों, वास्तव में वे पूरे वाक्य हैं। रूही की माँ भी उन शब्दों को मात्र शब्द न मानकर उनको पूरे वाक्य के रूप में दोहरा रही है। क्या लेखन में भी ऐसा ही कुछ होता है?

जब बच्चे पारंपरिक लेखन को अपने तरीकों से अपनाने लगते हैं, उस समय वे भी एक या दो शब्दों में पूरे-पूरे वाक्य या पूरी घटना को अभिव्यक्त कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, किसी चित्र के नीचे अगर बच्चे ने लिखा है 'चिया' तो इसका अर्थ निम्नलिखित में से कुछ भी हो सकता है—

- यह चिड़िया है;
- चिड़िया बैठी है;
- चिड़िया उड़ रही है;
- मैंने चिड़िया बनाई है;
- मैंने चिड़िया देखी है;
- चिड़िया खुश है, आदि।

बच्चे ने कौन-सी बात अभिव्यक्त की है, यह जानने के लिए आपको उसके साथ बातचीत करनी होगी, उसके दृष्टिकोण को समझना होगा और धैर्य रखना होगा। अगर बच्चे स्वनिर्मित वर्तनी या शब्दों का उपयोग कर रहे हैं तो आपको उन्हें समझने के लिए बच्चों की सहायता लेनी होगी।

साथ ही उन्हें खुद को लिखकर अभिव्यक्त करने के बहुत से 'सार्थक' मौके देने होंगे। यहाँ सार्थक शब्द बहुत महत्वपूर्ण है। सार्थकता का मतलब बड़ों के लिए अलग होता है और बच्चों के लिए अलग हो सकता है। उदाहरण के लिए, पेंसिल पकड़कर उसे फ़र्श या मेज़ पर पटक-पटककर बजाना बड़ों के लिए कुछ सार्थकता नहीं रखता, जबकि बच्चों के लिए यह पूरी तरह उद्देश्यपूर्ण काम है। इसलिए आपको लिखने के ऐसे मौके खोजने होंगे जो बच्चों के लिए सार्थक

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 54 5/26/2017 9:27:02 AM

हों, यानी उन्हें खुद लिखने का मन करे, वे लिखने की वजह खुद महसूस कर सकें। एक वजह है बातचीत!

हम बोलकर बातचीत करते हैं। दो साल का बच्चा भी आराम से बातचीत कर सकता है। लेखन भी तो बातचीत का ही एक रूप है! इसलिए आपको बच्चों के सामने लेखन को इस तरह पेश करना और इस्तेमाल करना होगा, जिससे बच्चे यह महसूस कर सकें कि लेखन भी एक तरह की बातचीत ही है। बच्चे जितना ज़्यादा अपनी बातें लिखेंगे, उतना उनके लेखन का विकास होगा।

आपको बच्चों की गलतियों की खोजबीन करने के बजाय यह जानने की कोशिश करनी होगी कि बच्चे लेखन के विकास के सफ़र में अभी किस पड़ाव पर पहुँचे हैं और आगे बढ़ने के लिए उन्हें किस तरह की मदद की ज़रूरत है।

किसे लेखन नहीं कहा जा सकता—

दृश्य 6

रूही पहली कक्षा में बैठी है। एक हाथ से कॉपी को उसने अच्छी तरह पकड़ा हुआ है। उसकी अध्यापिका ने श्यामपट्ट पर कुछ शब्द लिख दिए हैं—

कल हल बल चल छल जल मल पल थल
खल झल टल ढल तल दल पल फल

अध्यापिका जी ने सूची बनाने के बाद बच्चों को वे शब्द बोलकर सुनाए और बच्चों से कहा, "इन्हें साफ़-साफ़ सुंदर लिखाई में अपनी-अपनी कॉपी में लिखो।"

सभी बच्चे अपनी-अपनी कॉपी खोलकर उतारने लगे। रूही ने भी ऐसा ही किया। एक हाथ से कॉपी पकड़े और दूसरे हाथ की उंगुलियों से पेंसिल थामे वह श्यामपट्ट पर लिखे शब्दों को ध्यान से देखकर अपनी कॉपी में उतारने लगी। एक बार वह श्यामपट्ट पर देखती, फिर कॉपी पर, फिर श्यामपट्ट पर, फिर कॉपी पर...धीरे-धीरे उसने काम पूरा कर लिया। फ़ुर्ती से वह अपनी कॉपी अध्यापिका जी के पास ले गई। अध्यापिका जी ने कॉपी देखी तो उनके चेहरे पर मुस्कान आ गई। रूही ने बहुत सुंदर अक्षर उतारे थे। अध्यापिका जी ने उसकी तारीफ़ की और पूरी कक्षा को उसकी कॉपी दूर से दिखाई, "रूही ने बहुत सुंदर काम किया है।"

उन्होंने सबको बताया। इसके बाद अध्यापिका जी ने उसकी कॉपी पर दो सितारे बनाए। तभी उन्होंने ध्यान दिया कि रूही ने कुछ शब्दों को दो-तीन बार और कुछ को कई बार लिख दिया है और इस कारण पूरा पन्ना भर गया है। उन्होंने रूही की मेहनत की मन-ही-मन प्रशंसा की।

किसी भी भाषा की कक्षा का यह एक आम दृश्य हो सकता है। इस दृश्य में हम देख सकते हैं कि रूही ने अध्यापिका जी द्वारा सौंपी गई ज़िम्मेदारी या काम को अच्छी तरह करना सीख लिया है। उसकी लिखाई अध्यापिका जी को बहुत सुंदर और प्रशंसा के काबिल भी लगती है। पर यहाँ कुछ सवाल हमें बेचैन कर रहे हैं। इन सवालों से जूझने में आप ही हमारी सहायता कीजिए। आपके विचार से रूही ने बिना अध्यापिका के कहे कुछ शब्दों को बार-बार क्यों लिख दिया? रूही जब अध्यापिका जी द्वारा दिया गया काम कर रही थी तो उसके दिमाग में क्या चल रहा था?

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 55 5/26/2017 9:27:03 AM

शायद रूही के दिमाग में ये बातें या ऐसी ही कुछ अन्य बातें रही होंगी—

- किसी तरह सुंदर-सुंदर आकृतियाँ बना लूँ ताकि मैडम जी खुश हो जाएँ।
- कल भी मैडम ने पूरे पन्ने पर ऐसा ही कुछ लिखवाया था, शायद आज भी पूरा पन्ना भरना है।
- सबसे पहले मैं ही काम पूरा करूँगी।
- सारे तो एक जैसे हैं।

लिखने के बारे में आप अब तक काफ़ी कुछ पढ़ चुके हैं। लिखने की कुछ विशेषताएँ एक बार फिर यहाँ दी जा रही हैं—

- लिखना एक मानसिक प्रक्रिया है।
- लिखना समस्या-समाधान की प्रक्रिया है।
- लिखने का उद्देश्य अपने विचारों (ज़रूरतों, कल्पनाओं, भावों आदि) की अभिव्यक्ति है।
- लिखने के लिए अनेक निर्णय लेने की ज़रूरत पड़ती है।
- लिखने के लिए अनेक चुनाव करने होते हैं।
- खुद को अभिव्यक्त करने के लिए स्वतंत्रता ज़रूरी है।

दृश्य 6 को एक बार फिर पढ़िए।

आपके विचार से जब रूही श्यामपट्ट पर से अक्षरों को उतार रही थी, तब उस काम में लिखने की ये बुनियादी बातें शामिल थीं? क्या इन बुनियादी शर्तों में से कोई एक शर्त भी उस काम में शामिल थी? हमें यकीन है कि आपका जवाब होगा – नहीं।

आप देख सकते हैं कि यहाँ रूही को न तो अपने विचार लिखने हैं, न किसी समस्या का खुद अपनी मर्ज़ी से चुनाव करना है, न कोई समाधान खोजना है। उसे सिर्फ नकल करनी है। लेकिन हमारा सवाल यहाँ भी वही है – रूही जो कुछ कर रही है, क्या आप इसे 'लिखना' कहेंगे?

अगर हम दृश्य 1 और दृश्य 6 की तुलना करें, तो हमारे सामने निम्नलिखित बातें उभरकर आ जाती हैं—

दृश्य 1 (चित्र)	दृश्य 6 (बोर्ड पर से उतारना)
यह कार्य खुद रूही ने अपनी मर्ज़ी से किया है	यह कार्य शिक्षक ने दिया है, बच्चों की मर्ज़ी या इच्छा का कोई महत्व नहीं है
अपने मन से/ कल्पना से अपने विचारों को अभिव्यक्त किया जा रहा है	यहाँ रूही को नकल करना ही लिखना लग रहा है
जो काम रूही कर रही है, उसका अर्थ स्पष्ट है	रूही के लिए इस काम का कोई अर्थ नहीं है
रूही अपने मन से खुद को अभिव्यक्त कर रही है	रूही की कोशिश है कि अंतिम परिणाम/उत्पाद मेल खा जाए
खुद को अभिव्यक्त कर सकने का संतोष है	बस काम पूरा कर देने का भाव है
रूही ने खुद एक चुनौती या लक्ष्य का चुनाव किया है, जिसे अपनी मर्ज़ी और गति से वह प्राप्त कर रही है	रूही को एक कृत्रिम लक्ष्य दे दिया गया है, जिसे करने के लिए उसके पास कोई कारण या आज़ादी नहीं है

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 56 5/26/2017 9:27:03 AM

इस तुलना से आपको महसूस हो रहा होगा कि श्यामपट्ट पर से कुछ उतारना या ऐसा ही कोई अन्य काम, जिसकी बच्चों के लिए कोई सार्थकता न हो, वह लेखन की बुनियादी कसौटियों पर खरा नहीं उतरता। इसलिए सिर्फ़ सुंदर अक्षरों को बना लेना या नकल कर लेना, किसी शब्द या वाक्य की आकृतियों को बार-बार बना देना 'लिखना' नहीं कहा जा सकता। केवल लिपिबद्ध करना लिखना नहीं है।

आप जानते होंगे कि अधिकतर स्कूलों में लिखने के नाम पर केवल नकल करने या उतार लेने का काम ही किया और करवाया जाता है। लिखने के नाम पर बच्चों को यांत्रिक तरीके से कुछ अक्षर या शब्द बार-बार उतारने के लिए कह दिया जाता है। यह प्रक्रिया कई सप्ताह या महीनों तक स्कूल में चलती रहती है। इस पूरी प्रक्रिया में लेखन का औचित्य ही समाप्त हो जाता है। वैसे भी हमारी कक्षाओं में स्वतंत्र लेखन के अवसर न के बराबर होते हैं। आमतौर पर सीमित लेखन जैसे प्रश्न-उत्तर के अवसर ही ज़्यादा होते हैं। पाठ्यपुस्तकों के प्रश्न-उत्तर भी अभिव्यक्ति का ज़रिया नहीं बन पाते, बल्कि नकल का आधार बन जाते हैं। और तो और, जिन सवालों में साफ़-साफ़ बच्चों के विचार पूछे गए हों, उनके भी उत्तर बोर्ड पर या कुंजीनुमा किताबों के सहारे से उतरवा दिए जाते हैं। निबंध, पत्र आदि लिखने का काम, जिनका उद्देश्य ही लेखक यानी बच्चे की अभिव्यक्ति का विकास करना होता है, उन्हें भी रस्मी विषयों तक सीमित कर दिया जाता है, जैसे— 'स्वतंत्रता दिवस' पर निबंध लिखो या 'पिताजी को पत्र लिखकर रुपये मँगाओ।'

नकल करने या उतार लेने से बच्चों की अभिव्यक्त करने की कुशलता पर क्या असर पड़ता है, कभी महसूस किया है आपने?

उतारने या नकल करने के कुछ दुष्परिणाम ये हैं—

- उतारने की परंपरा के कारण बच्चा समस्याओं के हल खोजने की रणनीतियाँ नहीं खोज पाता।
- वह हमेशा के लिए सहारे खोजता रहता है। कुछ लिखना हो तो शिक्षक की ओर ताकता रहता है इस उम्मीद में कि उसे बताया जाए कि क्या और कैसे लिखना है।
- स्वतंत्र रूप से नहीं लिख पाता।
- मात्राओं पर ज़्यादा ध्यान रहता है, अभिव्यक्ति पर कम।
- बच्चे त्रुटिरहित लेखन और सुंदरता पर ज़्यादा ध्यान देने लगते हैं, मौलिकता पर कोई महत्व नहीं होता।
- बच्चे के मन में डर आता है कि लिखना मेरे बस की बात नहीं।
- उतारने के काम से बच्चों की लिखने की स्वाभाविक इच्छा पर रोक लग जाती है और अपनी बातें कहने की उनकी उत्सुकता कहीं खो-सी जाती है।
- बच्चे लिखने के आनंद को भूल जाते हैं और उन्हें ऐसा लगने लगता है कि लिखना तो किसी तरह का अभ्यास या 'पढ़ाई' है। उन्हें लगने लगता है कि

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 57 5/26/2017 9:27:03 AM

लेखन की प्रत्येक पंक्ति उन्हें शिक्षक द्वारा सिखाई या लिखवाई जाएगी। अपने मन से भी कुछ लिखा जा सकता है, यह उन्हें असंभव लगने लगता है।

लिखने में बच्चों का साथ कैसे दें

लिखना पढ़ने से अभिन्न रूप से जुड़ा है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम कुछ लिखते हैं तो जितना लिख चुके हैं, उसे साथ-साथ पढ़ते जाते हैं। जितना पढ़ा है, उसके आधार पर आगे क्या लिखना है, उसे गढ़ते जाते हैं। इस दो-मुखी प्रक्रिया के अलावा भी पढ़ना और लिखना एक-दूसरे को कई तरह से सहारा देते हैं। इन्हें समझने के लिए एक उदाहरण देखते हैं। अरुण जी की कक्षा में एक गतिविधि रोज़ की जाती है — आज की बात

इस गतिविधि में अरुण जी कक्षा में आकर सब बच्चों के बीच बैठ जाते हैं और उनसे बातचीत करते हैं। बातचीत का विषय कुछ भी हो सकता है, जो भी बच्चों को अच्छा लगे या बच्चे जिस बात को बताना चाहें। बच्चे जो बातें करते हैं, उनमें से एक बात चुनकर एक निर्धारित जगह पर लिख दी जाती है। आज चंदा ने बताया— "आज हमऊ हाट जइहें।"

अरुण जी ने यह बात उस जगह पर लिख दी, जहाँ पहले से लिखा है "आज की बात" सभी बच्चे जानते हैं कि यहाँ रोज़ कोई एक बात लिखी जाती है। जब अरुण जी चंदा की बात लिख रहे थे तो वे बोलते जा रहे थे कि वे क्या लिख रहे हैं। एक बात और, अरुण जी बिलकुल वही लिख रहे थे, जो चंदा ने कहा था, उसमें अपनी तरफ़ से कोई फ़ेरबदल नहीं कर रहे थे, न ही उसे ठीक करने की कोशिश कर रहे थे। कुछ बच्चे भी बिना किसी के कहे, साथ-साथ दोहरा रहे थे कि वहाँ क्या लिखा जा रहा है।

जब अरुण जी इस वाक्य को लिख रहे थे तो बच्चे देख रहे थे कि जो बोला जा रहा है, उसे ही लिखा जा रहा है। इससे उनकी ये धारणा मज़बूत हो रही थी कि बोली गई बात को लिखा जा सकता है। दूसरे शब्दों में, वे समझ पा रहे थे कि लेखन, बातचीत की एक विस्तारित प्रक्रिया ही है। साथ-साथ उन्हें यह भी नज़र आ रहा था कि लिखने की दिशा बाएँ से दाएँ होती है। वे जान-समझ रहे थे कि जो कुछ लिखा जा रहा है, वह एक सार्थक बात है। चूँकि जो कुछ लिखा जा रहा था, वह उनमें से एक बच्चे द्वारा कही गई बात ही थी, इसलिए वे और ज़्यादा ध्यान से लिखे हुए को देख रहे थे। इस कारण वे ध्यान दे पा रहे थे कि लिखित संकेतों की छवि कैसी है। वे देख रहे हैं कि दो शब्दों के बीच कितनी दूरी होती है। इसके अलावा भी वे कई बातें अपने-आप समझ पा रहे हैं, सिर्फ़ एक गतिविधि के ज़रिए।

इस गतिविधि में अरुण जी बच्चों के सामने एक आदर्श या मॉडल प्रदर्शित कर रहे हैं। जब एक बार लिखने से इतने अधिक फ़ायदे हम खोज पा रहे हैं तो रोज़ इस गतिविधि को करने से बच्चों के लेखन पर कैसा असर होगा, आप कल्पना कर ही सकते हैं। यकीनन, आप जितना ज़्यादा बच्चों के सामने लिखेंगे, उतना बेहतर होगा।

आप लिखने की शुरुआत बातचीत से भी कर सकते हैं। आप बच्चों से ही पूछ सकते हैं कि वे क्या लिखना चाहते हैं या किसके बारे में लिखना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों की पसंद के खाने-पीने

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 58 5/26/2017 9:27:03 AM

की चीज़ों के बारे में बातचीत करने के बाद उन नामों को श्यामपट्ट पर लिखने के लिए कहें। स्वाभाविक है कि ज़्यादातर बच्चे अलग-अलग शब्द लिखेंगे। अब उन्हें अपनी-अपनी कॉपी में इन शब्दों की सूची बनाने के लिए कहा जा सकता है। इसी गतिविधि को वर्णों की पहचान करवाने से भी जोड़ा जा सकता है। इसके लिए आप दो शब्दों में समानता खोजने और उसकी पहचान करने का खेल करवा सकते हैं।

जब बच्चे ऐसी गतिविधियाँ और खेल खेलते हैं जिनमें लिखने की ज़रूरत शामिल रहती है, तो वे खुद ही लिखने की माँग करना शुरू कर देते हैं। जब बच्चे माँग करते हैं, तो वे उस क्षण कुछ न कुछ लिखना ज़रूर चाहते हैं। इससे आपका कार्य आसान हो जाता है।

पढ़ना, लिखने के लिए एक 'संदर्भ संग्रह' का काम करता है। जितना अधिक बच्चे पढ़ते हैं, उतना अधिक वे संग्रह करते जाते हैं। अब आप जानने के लिए उत्सुक होंगे कि वे पढ़ते हुए किन चीज़ों का संग्रह करते हैं। बच्चे (और हम भी) कहानी, कविता या कोई भी अन्य सामग्री पढ़ते हुए तथ्य, कहानी की रूपरेखाएँ, भाषायी संरचनाएँ, बात कहने के तरीके आदि इकट्ठा करते जाते हैं। बच्चे जितना अधिक पढ़ेंगे, उतना अधिक यह संग्रह मज़बूत होगा।

प्रत्येक भाषा के कुछ नियम होते हैं। हम बच्चे को प्रत्येक नियम या भाषायी प्रयोग सिखा नहीं सकते। भाषायी नियम सिखाने की सीमा है। न तो हम प्रत्येक भाषायी प्रयोग और नियम जानते हैं, न ही सबकुछ सिखाना संभव है। हालाँकि, हम कहानी को नियम सिखाने के लिए नहीं सुनाते, फिर भी कहानी पढ़कर सुनाने का यह फ़ायदा है कि बच्चों को कई नियम या भाषायी प्रयोग खुद-ब-खुद आ जाते हैं।

बच्चों को रोचक कहानियाँ और कविताएँ सुनाकर/ पढ़कर भी उनके लेखन कौशल के विकास में साथ दिया जा सकता है। जब हम बच्चों को कहानी सुनाते हैं या कहानी की किताब पढ़ने के लिए देते हैं तो बच्चे को पता चलता है कि लिखित भाषा कैसी होती है, बात को कहने का ढंग किस-किस तरह का होता है। वे महसूस करने लगते हैं कि किसी बात को कैसे कहना अच्छा रहता है। कहानी की संरचना उनके मन में बनने लगती है। लेख और कहानी में अंतर पता चलने लगता है। पढ़ने के साथ लेखन की अवधारणाएँ बनने लगती हैं। लेखन का मौका मिलने पर बच्चों को इन अवधारणाओं के इस्तेमाल का मौका मिलता है।

कहानी सुनाने का एक पक्ष यह भी है कि बच्चों में कहानी लिखने की उत्सुकता भी जागने लगती है। बच्चे कहानी बनाना तो काफ़ी पहले शुरू कर देते हैं लेकिन अब वे किसी सुनी या अनसुनी कहानी को अपने तरीके से लिखने के लिए भी तैयार हो चुके होते हैं। पढ़ने से लेखन के लिए मदद /सहारा मिलता है। हो सकता है कि बच्चे पढ़ी गई किसी कहानी के नाम का अपनी कहानी में उपयोग कर लें या उसकी किसी घटना को अपनी कहानी में थोड़ा बदलकर इस्तेमाल कर लें। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि "मैं भी.." या 'बिल्ली के बच्चे' कहानी को पढ़ने के बाद या सुनने के बाद वे उसे अपने अंदाज़ में फिर से लिखना चाहें या उसे आगे बढ़ाना चाहें। अगर वे ऐसी इच्छा ज़ाहिर करते हैं तो आपका सकारात्मक रुख और

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 59 5/26/2017 9:27:03 AM

प्रोत्साहन के दो शब्द उनके उड़ने के लिए पंखों का काम करेंगे। ज़रूरत सिर्फ़ एक मौके की है। यह मौका उन्हें आपको ही देना होगा। बच्चों के लिए लिखने के अनेक अवसर बनाकर हम इस सफ़र में उनका सच्चा साथ दे सकते हैं।

आप अपनी कक्षा में बच्चों को लिखने के जो भी मौके दें, ध्यान ये रखना होगा कि लेखन कार्य ऐसा हो जो बच्चे को स्वाभाविक रूप से एक सक्रिय लेखक बनने के अवसर देता हो। बच्चे लेखन का उपयोग अपनी बात कहने, कल्पना करने, जानकारी देने, खबर देने, पता लगाने, खोज करने, बातचीत करने और सपने बताने के लिए कर सकें, इस बात की कोशिश करनी चाहिए। आप अगर प्रत्येक बच्चे से एक जैसे लेखन कार्य की उम्मीद करेंगे, फिर तो बच्चे कभी स्वतंत्र लेखक नहीं बन सकेंगे।

आप कोशिश करें कि लिखने की जो भी गतिविधि आप करवाएँ, बच्चों के लिए उसका कोई सार्थक उद्देश्य हो। दूसरा, बच्चों को स्पष्ट रूप से पता हो कि वे किसके लिए लिख रहे हैं। आप समझ गए होंगे कि हम एक बार फिर आपका ध्यान 'पाठक' और 'उद्देश्य' की ओर दिलाना चाहते हैं, यानी—

1. किसको ध्यान में रखकर लिखना है? (पाठक)
2. क्या लिखना चाहते हैं? (उद्देश्य)

लेखन के इन दोनों पक्षों को मज़बूत करने के लिए आप अनेक गतिविधियाँ आयोजित कर सकते हैं। पाठक की ओर ध्यान दें तो साफ़ समझ में आता है कि निश्चित तौर पर किसी व्यक्ति या वस्तु विशेष की बात कही जा रही है। आप कोई ऐसी गतिविधि गढ़ सकते हैं, जिसमें बच्चे अपने पास बैठे या दूसरी क्लास में बैठे किसी बच्चे के बारे में या अपने माता-पिता के बारे में सोचकर लिखें। वे गली के किसी कुत्ते या अपने गाँव आदि के बारे में भी लिख सकते हैं। बस इतना ध्यान रखें कि गतिविधि ऐसी हो, जिसमें बच्चों के पास लिखने के लिए कोई-न-कोई बात या बहुत-सी बातें ज़रूर हों। अगर आप बच्चों से किसी ऐसी चीज़ के बारे में लिखने के लिए कहेंगे जिसके बारे में उन्होंने कभी सुना नहीं है या जिसे कभी देखा भी नहीं है, तो वे कुछ नहीं लिख सकेंगे। इससे उनका आत्मविश्वास डगमगा जाता है। इसलिए आप जो भी लेखन कार्य करवाएँ, उसमें बच्चों के विचारों और अनुभवों को ही आधार बनाएँ।

बच्चे जैसे-जैसे बड़े होते हैं, उनके अनुभवों का दायरा भी बढ़ता चला जाता है। इसे ध्यान में रखते हुए लेखन में और आयाम जोड़े जा सकते हैं। उदाहरण के लिए, बच्चों से कहा जा सकता है कि वे खुद को किसी वस्तु, जैसे—पंखे या किसी प्राणी, जैसे— बिल्ली के स्थान पर रखकर सोचें कि वह क्या सोच रहा होगा। उन्हें कारण सोचने के लिए कहा जा सकता है, जैसे— आपको कौन सबसे अच्छा लगता है और क्यों?

एक और मज़ेदार काम यह हो सकता है— आपको अपनी बात इस पेंसिल को समझानी है। कैसे समझाओगे?

इस तरह के कामों से बच्चे अलग-अलग तरीकों से सोचना शुरू करेंगे। सोचने की इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों को शब्द और वाक्य अलग से सिखाने की

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 60 5/26/2017 9:27:03 AM

ज़रूरत नहीं पड़ेगी, बल्कि वे खुद-ब-खुद अलग-अलग पाठकों के हिसाब से खुद अपनी पसंद के शब्दों को चुन सकेंगे।

आप जो भी गतिविधि बनाएँ और करवाएँ, इतना ध्यान में रखें कि जो भी बच्चे लिखें, उसका कोई संदर्भ ज़रूर हो। यह संदर्भ ही बच्चों को उनके लेखन का 'उद्देश्य' देगा।

आकलन

कक्षा में बच्चे के लेखन का विकास बहुत कुछ आपके नज़रिए पर निर्भर करता है। किसी के नज़रिए को अपनी आँखों से देख पाना या दिखा पाना बहुत कठिन है, लेकिन हम जिस नज़रिए की बात कर रहे हैं, वह आप खुद को भी दिखा सकते हैं और दूसरों को भी वह नज़र आ जाता है। बच्चों के लेखन को देखकर आप जो प्रतिक्रिया करते हैं। उसके द्वारा आपका नज़रिया पता चल जाता है।

आज भी ज़्यादातर कक्षाओं में बच्चों के लेखन में इस तरफ़ ध्यान नहीं दिया जाता कि बच्चे ने अपने दिल की बात लिखी है या नहीं, बल्कि सारा ज़ोर अक्षरों की सही बनावट, लिखाई और शुद्धता पर रहता है। नतीजा यह होता है कि पूरी कॉपी पर जगह-जगह लाल गोले और काटे के निशान नज़र आते हैं। अगर बच्चे गलती नहीं करते तो मात्र एक सही का निशान लगाकर काम निपटा दिया जाता है। ये दोनों ही स्थितियाँ सही नहीं हैं और अधूरेपन को जताती हैं। अगर आप कॉपियों पर सिर्फ़ काटे या गोले बना देते हैं, तो इसका मतलब है कि आप बच्चे की सिर्फ़ कमियाँ ही दिखा रहे हैं। इसमें बच्चे के लिए छिपा हुआ संदेश यह है कि उसका लेखन गलतियों से भरा है और उसमें कुछ भी सही नहीं है। साथ ही, बच्चे के लिए यह संदेश भी है कि आपकी नज़र में वर्तनी ही महत्वपूर्ण है, विचार नहीं। क्या यह संभव है कि अगर आपके कहने से बच्चे ने कुछ कार्य किया है तो उसमें कुछ भी प्रशंसा के लायक न हो? कितना अच्छा हो अगर आप बच्चे को बता दें कि उसने जो काम किया है, उसमें आपको क्या-क्या अच्छा लगा? यकीन कीजिए, बच्चे के मन पर आपके हज़ारों गोलों और काटे के निशानों से अधिक असर आपकी इस एक बात का होगा!

इसके लिए आपको बच्चों के प्रत्येक कार्य के बारे में अपने विचार यानी टिप्पणियाँ भी लिखनी चाहिए। उदाहरण के लिए, आपका काम बहुत अच्छी तरह लिखा हुआ है, इसे पढ़कर मुझे अपने बचपन की बात याद आ गई, आप इसके साथ-साथ यह भी लिख सकते थे कि..., आपने फ़लाने शब्द का बहुत अच्छा इस्तेमाल किया है... इस बात को ऐसे भी कहा जा सकता था, ज़रा रेणु का काम पढ़कर देखो, उसने इसी बात को कैसे लिखा है आदि। और भी कई तरीके हैं जिनसे आप बच्चों के कार्य के बारे में अपनी प्रतिक्रया दे सकते हैं, जैसे— संकेतों का प्रयोग, किसी पुस्तक का संदर्भ देना भले ही वह पाठ्यपुस्तक ही क्यों न हो, बच्चे के किसी पिछले कार्य से तुलना करना आदि। इन सब तरीकों से आप बच्चों को यह एहसास करवा सकेंगे कि वे जो कुछ लिख रहे हैं, आपकी नज़र में वह महत्वपूर्ण है। इससे वे और अधिक बेहतर लिखने के लिए प्रेरित होंगे। इससे उन्हें यह भी एहसास होगा कि लिखना कोई यांत्रिक काम

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 61 5/26/2017 9:27:04 AM

नहीं है और न ही यह सिर्फ़ वर्तनी और व्याकरण है। आप उन्हें एहसास करवा सकेंगे कि लिखना वास्तव में बातचीत करने का ही एक रूप है और जब वे लिख रहे होते हैं तो असल में आपसे लिखकर बात कर रहे होते हैं। बातचीत एकतरफ़ा हो तो बातचीत नहीं लगती। इसलिए आपकी ओर से दी गई लिखित और मौखिक प्रतिक्रिया इस बातचीत को संपूर्ण बनाती है।

जब बच्चे अपने मन से कुछ लिखें तो हमें उनके दृष्टिकोण से ही उनकी अभिव्यक्ति को समझना होगा, तभी हम सही प्रतिक्रिया या आकलन कर सकेंगे। तब ही हम समझ सकेंगे कि उनकी स्वनिर्मित वर्तनी गलतियाँ नहीं हैं, बल्कि पारंपरिक वर्तनी तक जाने का एक अस्थायी पड़ाव है। होता ये है कि हम उनकी स्वनिर्मित वर्तनी को स्थायी मानकर बेचैन हो उठते हैं और इस चिंता में न जाने क्या-कुछ नहीं कर डालते। जबकि हमें करना सिर्फ़ इतना है कि बच्चों को पढ़ने के भरपूर मौके और सामग्री दें ताकि वे पारंपरिक वर्तनी से मेलजोल बढ़ा सकें।

यदि आपको ऐसा लगे कि बच्चे किसी टेढ़ी वर्तनी की गलती बार-बार कर रहे हैं तो उस और उसके जैसे अन्य शब्दों की वर्तनी की ओर बच्चों का ध्यान दिलवाने के लिए आप रोचक क्रियाकलाप और खेल करवा सकते हैं।

आप कोशिश कर सकते हैं कि बच्चे खुद अपनी गलतियों को पहचान सकें। उदाहरण के लिए, अगर किसी शब्द की वर्तनी बच्चे बार-बार गलत लिख रहे हैं तो आप उससे मिलता-जुलता शब्द दें और बच्चों को उन शब्दों में से सही शब्दों को पहचानने के लिए प्रेरित करें। आप खुद बच्चों को भी अपनी और एक दूसरे की गलतियाँ पहचानने के काम में शामिल कर सकते हैं। इससे बच्चे अपने काम का मूल्यांकन खुद करने में सक्षम होंगे।

लेखन की गतिविधियाँ

कुछ गतिविधियाँ नीचे दी गई हैं, जिन्हें आप पहली और दूसरी कक्षा में आराम से करवा सकते हैं—

- सूची बनाना— बच्चों से परिचित चीज़ों, जैसे रसोई के सामान की सूची बनवाएँ। सूची को ब्लैकबोर्ड पर लिख दें। इसके बाद बच्चों के दो समूह (क और ख) बनवाएँ। अब समूह 'क' के बच्चे समूह 'ख' के बच्चों से किसी वस्तु की माँग करेंगे। समूह 'ख' का कोई बच्चा खड़ा होकर बताएगा कि उस वस्तु का नाम कहाँ लिखा है या उसे कैसे लिखते हैं।
- चित्र को अपने मन से कोई नाम देना।
- कहानी या कविता का शीर्षक रखना।
- कविता या कहानी को आगे बढ़ाना— बच्चों को कोई कविता सुनाकर उसमें 3-4 पंक्तियाँ जोड़ने के लिए कहा जा सकता है। किसी कविता में किसी एक शब्द को बदलकर बच्चों को आगे की पंक्तियों को बोलने और लिखने के लिए भी कहा जा सकता है।
- तुकबंदी करना।
- नक्शा बनाना— बच्चों से उनके घर जाने का रास्ता पूछें। रास्ते बताने के लिए वे जिन शब्दों का

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 62 5/26/2017 9:27:04 AM

उपयोग करेंगे, उन्हें लिखवाने की कोशिश करें, जैसे— मंदिर, बाज़ार, पीपल का पेड़, झाड़ियाँ आदि। इसके बाद बच्चे स्कूल से घर तक का रास्ता चित्र बनाकर दर्शाएँगे और इन शब्दों को सही जगह पर लिखेंगे। बाद में नक्शे के बारे में थोड़े बड़े वाक्य भी लिखवाए जा सकते हैं, जिनमें वे थोड़े विस्तार से उस चीज़ का वर्णन करेंगे, जैसे स्कूल का पिछला हिस्सा इत्यादि।

- चित्र में होने वाली घटनाओं का वर्णन करना।
- अपने रोज़मर्रा के अनुभवों को लिखना।
- पाठ्यपुस्तक की गतिविधियों को सार्थक संदर्भ बनाकर पूरा करना।
- खुद की या दोस्तों द्वारा लिखी गई रचनाओं का कक्षा में प्रदर्शन करना।
- कक्षा में लिखित-समृद्ध परिवेश बनाना (किताबों, चित्रों, पोस्टरों, बच्चों द्वारा लिखी सामग्री आदि की सहायता से) और उसका उपयोग पढ़ने-लिखने की गतिविधियों में करना।
- परिचित वस्तुएँ, परिचित चिह्न/संकेत आदि एकत्रित करना— बच्चों से कहा जा सकता है कि घर से स्कूल आते समय नज़र आने वाली वस्तुओं या चिह्नों की सूची बनाएँ, जैसे— पोस्टर, विज्ञापन आदि। यह सूची शब्दों के ज़रिए भी बनाई जा सकती है और चित्रों के ज़रिए भी। इसके बाद बच्चों को उनके बारे में बताना है कि उन्हें उन्होंने कहाँ देखा और उसका उपयोग कहाँ पर होता है।
- शब्द पूरा करना— इस गतिविधि के लिए आप बच्चों के समूह बनवाकर उन्हें शब्द दे दें और उससे मौखिक और लिखित वाक्य बनवा लें।
- पहेली— बच्चों के समूह बनवाएँ। उन्हें एक कागज़ दें। उस समूह में से एक बच्चा एक वाक्य सोचकर एक शब्द लिखेगा और अपने पास वाले बच्चे को दे देगा। यह कागज़ एक बच्चे से दूसरे बच्चे के पास चला जाएगा। इसी तरह बढ़ते हुए कागज़ आखिरी बच्चे तक पहुँच जाएगा। उसे बताना है कि पहले बच्चे ने क्या वाक्य सोचा होगा।

स्वयं के अनुभव

आज एक सवाल आप स्वयं से कीजिए। याद करके बताइए कि आपने पिछली बार अपने मन के विचारों की अभिव्यक्ति कब की थी? कल? परसों? पिछले हफ़्ते? या याद ही नहीं आ रहा?

अगर हम खुद अपने विचारों को लिखकर अभिव्यक्त नहीं करते, या अगर हम खुद लिखने के अभ्यस्त नहीं हैं, तो हम बच्चों को लिखने के दौरान आने वाली चुनौतियों का अंदाज़ा कैसे लगा सकते हैं? हम कैसे जान सकते हैं कि स्वतंत्र रूप से लिखने पर कैसा महसूस होता है और कहाँ क्या दिक्कत आ सकती है? हो सकता है आपमें से कुछ साथी कहें कि हम अनुभवी हैं। खुद लिखते नहीं हैं तो क्या, लिखना क्या होता है, यह तो जानते ही हैं। बात तो विचारणीय लगती है। पर क्या बिना पानी में उतरे तैरना सीखा

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 63 5/26/2017 9:27:04 AM

या सिखाया जा सकता है? सिर्फ़ नियम जान लेने से क्या कोई खिलाड़ी बन सकता है? तो सिर्फ़ लिखने के नियम या व्याकरण जानने भर से कोई कैसे लेखक बन या बना सकता है?

हम जब खुद लिखना शुरू कर देंगे और उस रास्ते पर चलना शुरू कर देंगे जिस पर हम बच्चों को ले जाना चाहते हैं, तब हम सच्चे अर्थों में उनके हमसफ़र बन सकेंगे।

टिप्पणियाँ

इस लेख में अनौपचारिक भाषा और संवादों का प्रयोग किया गया है ताकि वास्तविक जीवन की स्वाभाविकता बनी रहे और आम बोलचाल की भाषा की झलक नज़र आ सके।

लेख में प्रयुक्त 'बड़ों' शब्द का आशय है वयस्क वर्ग जिनमें शिक्षक, अभिभावक आदि सभी सम्मिलित हैं।

लेख में रूही नाम की लड़की के जीवन के जिन दृश्यों का उल्लेख है, वे काल-क्रम के अनुसार नहीं हैं बल्कि प्रसंग/विषयानुसार हैं।

'पारंपरिक वर्तनी' का अर्थ है, शब्दों की वह वर्तनी जिसे सामान्यत: लोग पहचानते और प्रयोग में लाते हैं। छोटे बच्चे इस वर्तनी तक पहुँचने से पहले अपनी स्वयं की वर्तनी गढ़ सकते हैं, जिसे 'स्व-निर्मित वर्तनी' कहा जा सकता है।

Prathmik Shikshak Oct- Jan 2016.indd 64 5/26/2017 9:27:04 AM